ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-5* August- 2021
Anthology : The Research

ऋग्वेद में पर्यावरण चिंतन

Environmental Reflections in Rigveda

Paper Submission: 15/08/2021, Date of Acceptance: 25/08/2021, Date of Publication: 26/08/2021

सुषमा शुक्ला
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजा मोहन गर्ल्स पी०जी० कालेज, अयोध्याॉ उ०प्र०, भारत

सारांश

ऋग्वेद में पर्यायवरण को जब हम देखते है तो पाते है कि समस्त वेद यज्ञ-प्रक्रिया पर आधारित है और यज्ञ प्रक्रिया सम्पूर्ण को संतुलित करती है। पर्यायवरण-परि$आन वृड-ल्युट धातु से बनता है। अर्थात् जो चीज हमें आच्छादित करे या प्रवाहित करें, उसका नाम पर्यायवरण है। पर्यायवरण का अर्थ है- स्वच्छ हवा, पानी और भौगोलिक स्थिति। इससे सिद्ध होता है कि वेदों में प्रतिपादित यज्ञ-प्रक्रिया वातावरण में विद्यमान, हवा पानी को प्रदूषित होने से बचाती है। प्रकृति से सामंजस्य बना रहे इसके लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने विभिन्न धर्मशास्त्रीय महत्व रखकर यज्ञ-प्रक्रिया को विभिन्न धर्मशास्त्रीय महत्व यज्ञ-प्रक्रिया को मनुष्य के समक्ष प्रस्तुत किया।

अग्नि में भलीभाँति दी गई हवन-सामग्री की आहुति सूर्य को प्राप्त होती है। सूर्य से वर्षा होती है। वर्षा से अन्य उपजता है। उससे प्रजा प्रसन्न होती है।

अग्नौप्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्हते।
आदित्याज्जायते वृष्टि र्वृष्टेरून्नं ततः प्रजाः॥ मनस्ृमृति 3/76

वर्षा करने वाला पर्जन्यदेव कैसे औषधियों में जल को स्थापित करता है इसका वर्णन पर्जन्य सूक्त (ऋ0 5.83) में किया गया है-

इस तरह पर्यायवरण शिक्षा का इतिहास हमारे प्राचीनतम संस्कृत वाङमय वेदों शिक्षा का इतिहास हमारे प्राचीनतम संस्कृत वाङमय वेदों से आरम्भ होती है। जहा नदियों, वृक्षों, पृथ्वी, जल, अग्नि आदि को देवता के रूप में पूजा करने का आदेश दिया गया है। यज्ञ, पूजा, प्रकृति पे्रम पारस्परिक सौहार्द जीव-मात्र के प्रति प्रेम और अहिंा का भा दीर्घ-जीवन की कामना मंगलकार्य भावों के बीच ही वैदिक-समाज का विकास हुआ है। इसलिए वृक्षों को मत काटो, यह मानकर उनकी पूजा की गयी, तुलसी, वट, केला आदि वृक्षों की उनकी उपयोगिता के आधार पर ही पूजा जाता था जिससे कि मानव का पर्यायवरण के प्रति सकारात्मक द्रष्टिकोण विकसित हो सके।

When we look at the environment in the Rigveda, we find that all the Vedas are based on the process of sacrifice and the process of sacrifice balances the whole. The environment-pari$on is made of the metal Vrid-Lute. That is, the thing which covers or flows us, its name is the environment. Environment means clean air, water and geographical location. This proves that the process of sacrifice as enunciated in the Vedas, existing in the atmosphere, saves the air from getting polluted. In order to remain in harmony with nature, our sages and sages, keeping various theological importance, presented the process of yagya to man with different theological significance.

The sacrificial offerings given well in the fire are received by the Sun. It rains from the sun. Others are produced by rain. The people are pleased with him.

Agnoprasthahuti: Samyagadityamupatishte.
Aditya Jayate Vrishti Varshterunnam Taha Prajah. Mansu Mrity 3/76

How Parjanyadev, who gives rain, establishes water in medicines, it has been described in Parjanya Sukta (R. 5.83)-

In this way, the history of environmental education begins with our oldest Sanskrit Vamayya Vedas. Where rivers, trees, earth, water, fire etc. have been ordered to be worshiped as deities. The Vedic society has developed in the midst of yagya, worship, love of nature, mutual harmony, love for all living beings and ego's desire for long life. Therefore, do not cut the trees, believing that they were worshiped, Tulsi, Vat, Banana etc.

मुख्य शब्द- ऋग्वेद, पर्यावरण, यज्ञ प्रक्रिया, इन्द्र सूक्त, प्रकृति।

Keywords: Rigved, Environment, Yojna Process, Indra Sakta, Nature.

प्रस्तावना

विश्व साहित्य की प्राचीनतम रचना वेद है। वे ज्ञान के भण्डार एवं आर्य जाति के इतिहास के मूल स्रोत माने जाते हैं। वस्तुतः वेदों के द्वारा ही प्राचीन भारतीय इतिहास और सभ्यता एवं संस्कृति का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। वेदों ने न केवल आर्य जाति अपितु समस्त मानव-जाति को सर्वप्रथम ज्ञान का भण्डार दिया है। उस ज्ञान के फलस्वरूप ही मानव ने प्रकृति के अनेकानेक रूपों से सामंजस्य कर उससे अनेक लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न किया है। वेदों के अध्ययन के महत्व के विषय में शतपथ-ब्राह्मण में लिखा है&"धन से परिपूर्ण पृथ्वी के दान करने से जितना फल होता है] वेदों के अध्ययन से भी उतना ही फल मिलता है। उतना ही नहीं] अपितु उससे भी अधिक न नष्ट होने वाले अक्षय लोक को मनुष्य प्राप्त करता है।" [(1)] (श0 ब्रा0 11@5@61) वेद संख्या में चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदत्रयी में ऋग्वेद प्रथम वेद एवं अन्य वेदों का आधार है। ऋग्वेद में पर्यावरण को जब हम देखते है तो पाते हैं कि समस्त वेद यज्ञ-प्रक्रिया पर आधारित हैं और यज्ञ-प्रक्रिया सम्पूर्ण पर्यावरण को संतुलित करती है। पर्यावरण परि $ आ $ वृ $ ल्युट धातु से बनता है, जो हमें आच्छादित करे या प्रवाहित करे] उसका नाम पर्यावरण है। अतः पर्यावरण का अर्थ है- स्वच्छ हवा] पानी तथा भौगोलिक स्थिति। इससे सिद्ध होता है कि वेदों में प्रतिपादित यज्ञ-प्रक्रिया वातावरण में विद्यमान हवा, पानी को प्रदूषित होने से बचाती है। प्रकृति से सामंजस्य बना रहे इसके लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने विभिन्न धर्मशास्त्रीय महत्व रखकर यज्ञ-प्रक्रिया को मनुष्य के समक्ष प्रस्तुत किया हैA

अग्नौप्रास्ताहुतिःसम्यागादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरून्न ततः प्रजा। मनुस्मृति 3/76

अर्थात् अग्नि में भली–भाँति दी गई हवन–सामग्री की आहुति सूर्य को प्राप्त होती है। सूर्य से वर्षा होती है। वर्षा से अन्न उपजता है। उससे प्रजा प्रसन्न होती है।

वर्षा करने वाला पर्जन्य देव कैसे औषधियों में जल को स्थापित करता है इसका वर्णन पर्जन्य–सूक्त (ऋ० 5.83) में किया गया है– "क्रनिकदद वृषभो जीरदानू रेतो दधारयोषधीषु गर्भम्।"

भौगोलिक–स्थिति का वर्णन करते हुए हिरण्यगर्भ सूक्त में (ऋ० 10, 121) में कहा गया है– यस्येमे हिमवन्तो महित्वा, यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमा प्रदिशो यस्य बाहू, कस्मैदेवायहविषा विधेम॥

पर्यावरण संरक्षण आज की समस्या ही नहीं है, अपितु ऋग्वेद काल में भी थी किन्तु उसका निवारण तत्कालीन अभीष्ट देवताओं द्वारा कर लिया जाता था। इन्द्र सूक्त में वृत्त का वधकर जल को सुरक्षित करने का अनेक मंत्र इन्द्र संबंधित सूक्तों से भरा पडा है। ऋग्वेद में इन्द्र के द्वारा वृत्तासुर का वध एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में वर्णित है। वृत्त जलवृष्टि का अवरोधक राक्षस था। इन्द्र का उससे शाश्वत बैर था। वृत्रासुर के ऊपर इन्द्र के द्वारा वज्र से प्रहार करते समय द्युलोक और पृथ्वीलोक दोनों कांप जाते हैं। 'योहत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून, (ऋ० 2/12/3)

पर्यावरण को संरक्षित करने वाले उस इन्द्र देवता के शासन में मानो सम्पूर्ण प्रकृति है जिसने प्रकृति के मूल सूर्य एवं चन्द्र को उत्पन्न किया है तथा जो जलों को बरसाने वाला है।

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वेरथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता सजनास इन्द्र ॥ ऋ० 2/12/7

ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में जो कि वर्ण–व्यवस्था का कारक सूक्त माना गया है यदि हम पर्यावरण की दृष्टि से देखें तो उस पुरूष सूक्त में पर्यावरण कैसे बनता है इस दृष्टि से पुरूष सूक्त का यह मंत्र–

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत्।
मुखादिन्द्रचाग्निश्च प्राणादवायुर जायत॥

इस मंत्र द्वारा वायु पुरूष के प्राण से उत्पन्न माना गया है। वायु प्राण है। वैदिक ऋषि की मान्यता है कि वायु विश्व भेषज (चिकित्सक) है। ऋग्वेद का ऋषि प्रार्थना करता है कि वायु

हमारे हृदय के लिये भेषज रूप से शान्तिदायक, सुखदायक होकर बहे और हमारी आयु को बढाये।

आ वातवाहि भेषजं विवातंवाहि यद्रूपः।
त्वं हि विश्वं भेषजो देवानां इत ईयसे॥ (ऋ० 10–137–3)

वैदिक ऋषि यज्ञ के माध्यम से वायु शुद्धि पर जोर देते हैं। वायु शुद्धिकरण का सबसे उचित साधन होम–यज्ञ से बढकर कुछ नहीं है। यज्ञ से वायु प्रदूषण नष्ट होता है।

अग्निहोत्र सायं प्रात गृहाणां निष्कृतिः स्विष्ट।

(तैत्तिरी
यारण्यक 10–79)

ऋग्वेद में वायु प्रदूषण को समाप्त करने के साथ –2 जल शुद्धि की बात करते हुए सर्वप्रथम जल की उत्पत्ति सृष्टि के प्रारम्भ में कैसे हुई इसका उल्लेख करते हुए हिरण्यगर्भ सूक्त में कहा गया है–

आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन्।
गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्॥

तात्पर्य यह है कि सृष्टि के आदि में विशाल जलराशि थी, उससे हिरण्यगर्भ प्रजापति उत्पन्न हुआ। इसीलिये इस जलराशि की शुद्धि करते हुए कहा गया है–

द्यो शान्तिरन्तरिक्षं द्योशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः।
शान्तिरोषधयाः शान्ति॥ (शुक्ल यजु० मा० सं० 36–17)

अर्थात् द्यो अन्तरिक्ष तथा पृथिवी हमें शान्ति प्रदान करें। जल शान्ति प्रदायक हो, औषधियां तथा वनस्पतियां शान्ति प्रदान करने वाली हों। सभी देवगण शान्ति प्रदान करें। सर्वव्यापी परमात्मा सम्पूर्ण जगत में शान्ति स्थापित करें। शान्ति भी हमें परम शान्ति प्रदान करे। अर्थात् कहीं भी प्रदूषण न रहे।

ऋग्वेद में जिस तरह हिरण्यगर्भ की उत्पत्ति का कारण जलराशि को माना है। उसी तरह भगवान शिव उस जल के रूप में हमें प्रत्यक्ष दिखलायी देते हैं जिसे ब्रह्मा ने सबसे पहले बनाया था। या सृष्टिः सुष्ठुराधा वहति विधिहुतं या हर्वि या च होत्री। (अ०शा० प्रथम अंक)

पर्यावरण की रक्षा एवं समृद्धता बनाये रखने के लिये संस्कृत साहित्य में आदिकाल से ही वृक्षों, नदियों एवं पर्वतों एवं पर्यावरण रक्षक अन्य घटकों की पूजा पर बल दिया गया है–"रम्यान्तरः कमलिनी हरितैः सरोभिश्छाया द्रुमैनियमितार्कमयूखतापः॥ अभि० शा० 4/11"

शकुन्तला का मार्ग पूर्ण रूप से प्रदूषण मुक्त हो ऐसी कामना की गयी है।

वेदों में पृथिवी को माता कहा गया है। ऐसी वह पृथिवी बहुत से ऊँचे नीचे और समतल भागों से युक्त है जो अनेक प्रकार की शक्तियों से युक्त औषधियों को धारण करती है। वह पृथिवी हमारे लिये विस्तृत हो और हमारे लिये समृद्ध बने।

असम्बाधं मध्यतो मानवानां यस्य उद्वतः प्रवतः समंबहु।
नानावीर्या औषधीया विभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नमः॥ 21 /
अथर्ववेद

अर्थात् प्रदूषण रहित पृथिवी हमें अनेक प्रकार के सुखो से युक्त करें। ऐसी अथर्ववेद में भी कामना की गयी है।

इस तरह पर्यावरण शिक्षा का इतिहास हमारे प्रचीनतम संस्कृत वाडगमय वेदों से प्रारम्भ होता है। जहाँ नदियों, वृक्षो, पृथ्वी, जल, अग्नि आदि को देवता के रूप में पूजा करने का आदेश दिया गया है। पर्यावरण के माध्यम से वैदिक ऋषियों ने जिस दिव्य सत्य का अन्वेषण किया उसकी अनुगूंज जीवन के कण–कण में सुनाई देती है। यज्ञ, पूजा, प्रकृति प्रेम पारस्परिक सौहार्द जीव–मात्र के प्रति प्रेम और अहिंसा का भाव दीर्घ जीवन की कामना मंगलकारी भावों के बीच ही वैदिक–समाज का विकास हुआ है। सम्पूर्ण संस्कृत वाडगमय में पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा धर्म का आश्रय लेकर दी गई है। धर्म की भावना से जो कार्य किया जाता है उसमें स्थिरता आ जाती है। संस्कृत विद्वान इस तथ्य से पूर्णतया सुपरिचित थे। इसलिए वृक्षों को मत काटों, यह

मानकर उनकी पूजा की गई। तुलसी वट, केला आदि वृक्षों को उनकी उपयोगिता के आधार पर ही पूजा जाता है। अतः हमारे वेदों में समस्त प्रकृति को जिस धार्मिक श्रद्धा से देखा, पूजा गया है, उस दृष्टि से जनसामान्य को अवगत कराया जाये जिससे मानव का पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके। आज के परिप्रेक्ष्य में हमें पर्यावरण की उपयोगिता इस वैश्विक महामारी कोविड–19 में आक्सीजन की कमी को देखकर यह ज्ञान हो गया कि पर्यावरण की शुद्धता को हम, वृक्षों एवं जलो का संरक्षण कर, पौधारोपण करके, प्रकृति से प्रेम करके, पृथ्वी पर बहुत भार न रखकर (Social distancing द्वारा) तथा स्वच्छता और सफाई पर ध्यान रखकर पर्यावरण की तथा स्वयं की रक्षा की जा सकती है।

अध्ययन काउद्देश्य

पर्यावरण को संतुलित रखना हमारे जीवन की अनिवार्यता है। प्राचीन समय में श्री ऋषियों, मुनियों द्वारा पर्यावरण पर चिंतन मनन किया गया है। आजके परिप्रेक्ष्य में हमें पर्यावरण की उपयोगिता इस वैश्विक-महामारी कोविड-19 में आक्सीजन की कमी को देखकर यह ज्ञात हो गया कि पर्यावरण को शुद्ध रखना हम सभी भारतीयों का नैतिक कर्तव्य है।

निष्कर्ष

पर्यावरण शिक्षा का इतिहास संस्कृत वाङ्मय वेदों से प्रारम्भ होता है। जहाँ नदियों, वृक्षों, पृथ्वी, जल, अग्नि आदि को देवता के रूप में पूजा करने का आदेश दिया गया है। प्रकृति से साम्जस्य बना रहे इसके लिए हमारे ऋषियों मुनियों ने विभिन्न धर्मशास्त्रीय महत्व रखकर यज्ञप्रक्रिया को मनुष्य से समक्ष प्रस्तुत किया है। हम आज भी प्रकृति से साम्जस्य स्ाापित कर पर्यावरण को संतुलित रख सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वैदिक सूक्त संग्रह – डॉ० विन्ध्यवासिनी पाण्डेय पाराशर भवदीय प्रकाशन अयोध्य –फैजाबाद।*
2. *ऋग्वेद (हिन्दी भाष्य प्रथम मण्डल) भाष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य प्रकाशन 814, कुण वालान अजमेरी गेट, दिल्ली*
3. *ऋग्वेद (नवम, दशम, मण्डल) भाष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य प्रकाशन 814, कुण वालान अजमेरी गेट, दिल्ली*
4. *मनुस्मृति स्व० श्री पं० तुलसीराम स्वामी आर्य प्रकाशन 814, कुण्डे वालान अजमेरी गेट दिल्ली*
5. *एकादशोपनिषद् महात्मा नारायण स्वामी आर्य प्रकाशन 814, कुण्डे वालान अजमेरी गेट दिल्ली*
6. *ऋग्वेद 2, 3, 4, मण्डल महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य प्रकाशन 814, कुण्डे वालान अजमेर गेट, दिल्ली*
7. *यजुर्वेद महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य प्रकाशन 814, कुण्डे वालान अजमेरी गेट, दिल्ली*
8. *अथर्ववेद महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य प्रकाशन 814, कुण्डे वालान अजमेरी गेट, दिल्ली*
9. *वेदों में राष्ट्र का स्वरूप – डॉ० जातवेद त्रिपाठी विद्या निधि प्रकाशन नई दिल्ली*
10. *अभिज्ञान शाकुन्तलम् – राजदेव मिश्र भवदीय प्रकाश्न*